The University of Osaka Institutional Knowledge Archive

Title	गीतांजलि श्री के साहित्य में सांप्रदायिक सद्भाव और स्त्री
Author(s)	Singh, Prakash Ved
Citation	外国語教育のフロンティア. 2023, 6, p. 39-54
Version Type	VoR
URL	https://doi.org/10.18910/91027
rights	
Note	

The University of Osaka Institutional Knowledge Archive : OUKA

https://ir.library.osaka-u.ac.jp/

The University of Osaka

गीतांजलि श्री के साहित्य में सांप्रदायिक सद्भाव और स्त्री

Singh Ved Prakash

Abstract

The purpose of this article is to show main features of Geetanjali shree's (1957-) short stories and novels. In her writing the there are two main concerns- first one is two highlight the plight of women and second one is communalism and communal harmony. She has written 5 novels and 36 stories in five collections. In her all writing 32 times she has focused her plot on women and 7 times on communalism and communal harmony. There are some other topics writer has elaborated like Dalit and labourer society, nature and baseless fear for death etc. In some of her stories and novels she has jointly expressed her view on communal problem and situation of women. If woman has right to decide and has her own space to live is a big achievement. In her one short story the main protagonist is living by her own way. Her father is angry on her and said from beginning to woman's' life she has no right to live without father or husband or son. And in her some short stories and novels her female characters are more inclusive and democratic than male characters. In one of her novel a female character is writer and her husband a professor in a university and a liberal Muslim person. In her city Hindu-Muslim persons are fighting together but they are giving an example to live with communal harmony is possible in different religions.

Keywords: Short story, novel, women, communal harmony, male dominating society.

गीतांजलि श्री के कथा साहित्य को पढ़ने के बाद मुख्य तौर पर दो मुख्य विचार सामने आए। उनके लेखन की धुरी में इन दो विचारों की प्रमुखता है--पहला विचार उनके उपन्यासों और कहानियों में स्त्री चरित्रों के बारे में और दूसरा विचार सांप्रदायिक सद्भाव का विचार है। स्त्रियों में भी अधेड़ और बूढ़ी स्त्रियां उनके कथा-संसार में प्रमुख भूमिका में उपस्थित हैं। 'रेत समाधि' की माँ, 'माई' उपन्यास की माई, 'तिरोहित', 'खाली जगह' की माएँ और 'मार्च, माँ और साकुरा' की माँ, आदि उदाहरण अभी ध्यान में तुरंत आ रहे हैं। भारतीय समाज की एक बड़ी स्थिति जहाँ स्त्री जीवन में पुरुष-सत्ता द्वारा दी जाने वाली दृश्य-अदृश्य परेशानियों, दखलअंदाजियों, यातनाओं के रूप में दिखाई देती हैं, वहीं दूसरी स्थिति हिन्दू-मुस्लिम संबंध को सद्भाव की बजाय सांप्रदायिकता में धकेलने वाली स्थिति है। भारतीय समाज के वर्तमान और भविष्य को प्रभावित करने वाली इन दोनों स्थितियों पर गीतांजलि श्री लगातार लिखती रही हैं। भारतीय समाज के इन दो विषयों पर चिंतन और लेखन से गीतांजलि श्री उन दो बड़ी समस्याओं को केंद्र में रखती हैं जिनसे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में कमोबेश सभी लोग प्रभावित हैं। इस लेख में सबसे पहले लेखक के जीवन का संक्षिप्त परिचय देना ठीक होगा।

जीवन परिचय

गीतांजलि श्री जी का जन्म उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले में सन् 12 जून 1957 को एक समृद्ध हिन्दू परिवार में हुआ। उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में उनकी आरंभिक शिक्षा हुई। उच्च शिक्षा जवाहर लाल विश्वविद्यालय से प्राप्त की। उनके पिता भारतीय प्रशासनिक सेवा में थे इसलिए घर और शिक्षा का माहौल और माध्यम अंग्रेजी के निकट था। माँ और उनका परिवेश हिन्दी से जुड़ा हुआ था। माँ को अंग्रेजी नहीं आती थी इसलिए माँ से उन्होंने हिन्दी का संस्कार पाया। घर में हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं भी बचपन में सुलभ थीं। जहां से उन्होंने हिन्दी साहित्य का प्रारम्भिक स्वाद चखा। बाद में दिल्ली और बड़ौदा में उच्च शिक्षा प्राप्त की। दिल्ली कॉलेज और जामिया मिल्लिया इस्लामिया में इतिहास का अध्यापन भी किया। साथ ही उन्होंने रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 'घरे-बाहरे' का नाट्य रूपांतरण किया है। और 'नायिका भेद' का लेखन किया है। रंगमंच का भी कार्य किया है।[1]

घर और परिवेश में स्त्री और हिन्दू-मुस्लिम सद्भाव और टकराव को उन्होंने बहुत पास से देखा। वे अपने परिवेश में मौजूद इन दोनों स्थितियों पर विभिन्न साक्षात्कारों में प्रकाश डालती रही हैं। अपने पाँच उपन्यासों और पाँच कहानी-संग्रहों में कभी आत्मपरक और कभी अन्य को केंद्र में रखकर अक्सर ही इन दोनों मुद्दों पर एक साथ या एक-एक करके लेखन करती रही हैं।

रचनाओं का परिचय

अपने पाँच उपन्यासों और पाँच कहानी-संग्रहों में गीतांजलि श्री ने अनेक विषयों को अपने लेखन में समेटा है। लेकिन जैसा कि इस लेख का शीर्षक है "गीतांजलि श्री के साहित्य में सांप्रदायिक सद्भाव और स्त्री" इन दो विषयों पर उन्होंने जमकर और डूबकर लिखा है। अपनी सबसे पहली कहानी 'बेल-पत्र' में स्त्री और हिन्दू-मुस्लिम संबंध पर उन्होंने एक साथ ही लिखा। अपने नवीनतम उपन्यास 'रेत-समाधि' पर भी संयोगवश

या सुविचारित ढंग से उन्होंने स्त्री जीवन और हिन्दू-मुस्लिम संबंध पर बिलकुल अनोखे तरीके से एक नया संसार रच दिया है। जिसमें भारत-पाकिस्तान के विभाजन का दुख भी बड़ी कुशलता के साथ गूँथ दिया गया है।

अगर हम यहाँ गीतांजलि श्री की रचनाओं की आलोचना करने से पहले बेहद संक्षेप में उनकी कथा वस्तु जान लेंगे तो इस लेख को पढ़ने वाले ज्यादा अच्छे रूप में इसे समझ पाएंगे।

जैसा कि पहले बताया गया है कि पाँच उपन्यासों और पाँच कहानी-संग्रहों की रचना की है। इन पाँच संग्रहों में उनसठ कहानियाँ हैं लेकिन परवर्ती तीन संग्रहों में तेईस कहानियां दो-दो बार आ गई हैं, इस तरह से कुल छत्तीस कहानियाँ गीतांजलि श्री जी ने लिखी हैं। बहुत संक्षेप में इन इकतालीस रचनाओं (छत्तीस कहानियाँ और पाँच उपन्यासों) का कथा-सार यहाँ प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

पहले संग्रहों के प्रकाशन-काल और विषय-सूची के अनुसार कहानियों का कथा-सार दिया जा रहा है।

प्राइवेट लाइफ - यह गीतांजलि श्री जी की पहली कहानी न होते हुए भी इसका सार कहानी-संग्रह के क्रमानुसार सबसे पहले यहाँ लिखा जा रहा है। एक लड़की अपने अनुसार जीवन जीना चाहती है। उसके माँ-पिताजी को जब यह मालूम चलता है कि वह अब होस्टल छोड़कर अकेले रहने लगी है और उसके कमरे में किसी आदमी के कपड़े मिलते हैं तो उसके पिता उससे कहते हैं कि उसका ऐसे अकेले रहना मानों वेश्यावृत्ती जैसा काम है। अपनी बेटी को वे कहते हैं कि "लड़की हमेशा किसी की निगरानी में रहती है। पहले बाप, फिर पति, फिर बेटा उसकी देख-भाल करता है।"[2] इस लड़ाई में वह अपने पिता को कहती है कि "मेरी प्राइवेट लाइफ की आपको कद्र करनी ही पड़ेगी।" जहां लड़की रहती है उसके मकान मालिक रस्तोगी भी लड़की को ही बुरा कहते हैं। इस समाज में लड़की के अकेले रहने को माँ, पिता या कोई दूसरा स्वीकार नहीं कर पा रहा है। लड़की ऐसे समाज में अपनी निजी जिंदगी के लिए बुरा सुनकर भी कोशिश करती है। प्राइवेट लाइफ का अर्थ उसके लिए बिना किसी की दखलअंदाजी के इज्जत के साथ अपनी जिंदगी बिताने की शक्ति और अपना स्थान है।

बेल-पत्र - फातिमा और ओम ने धर्म के दायरे को न मानकर अंतर्धार्मिक प्रेम-विवाह किया है। दोनों ने अपने-अपने परिवारों और धर्मों की परवाह न करते हुए यह मुश्किल कदम उठाया। लेकिन अब दोनों में अपने-अपने धर्म और परिवार एक धार्मिक आग्रहों के कारण मनमुटाव शुरू हो गया है। फातिमा कोशिश करती है कि अपनी दिवंगत सास की मूर्ति पर दीया जलाए और शन्नो चाची द्‌वारा दिए गए मंदिर के प्रसाद और धागे को अपने हाथ पर भी बँधवा लेती है लेकिन ओम फातिमा को नमाज पढ़ता देखता है तो उसे बुरा लगता है। तो वह कहती है कि अगर तुम्हारे धर्म की बातें करती हूँ तो बुरा नहीं तो नमाज पढ़ना कैसे गलत हो सकता है। हिन्दू-मुस्लिम संस्कारों में गहरे रूप से विद्‌यमान अपने-अपने धर्म की प्रति नरम और दूसरे धर्म के प्रति हेय दृष्टि को ओम के व्यवहार में दिखाया जाता है। "ओम की भतीजी की शादी में फातिमा ने हरी साड़ी पहन ली थी। अनायास ही ओम के मुँह से निकल पड़ा था---'यह क्या मुसलमानी रंग उठा लाईं?"[3] यहाँ फातिमा का दुख एक स्त्री का दुख भी है जिसे इस कहानी में गीतांजलि श्री दिखाती हैं।

पीला सूरज - जेनेवा के अंतरराष्ट्रीय श्रमिक संगठन में श्रमिकों के बारे में बोलने के लिए एक भारतीय उद्‌योगपति की कहानी है। वह जेनेवा के एक स्थान पर बारिश में फँसी हुई अपने बचपन के बारे में याद

कर रही है। दलित टुइयां और मंडा बाई के बारे में सोचती है। भारत से जेनेवा के लिए चलने से पहले मैनेजर को फाटक के सामने की झोपड़ियाँ हटाने का आदेश दे आई है। वह बरसात में किसी बुढ़िया के छाते के नीचे अंधेरे में बचपन की काल्पनिक मंडा बाई को याद कर रही है। टुइयाँ गरीबी, भूख और चोरी के इल्जाम और सजा के कारण मर चुका है। इस बरसाती रात के बाद क्या इस देश में, भारत के उस घर पर जहां टुइयाँ रहता था वहाँ पर और वाचिका के घर के आगे के उन गरीब झोंपड़ों पर सूरज की रोशनी आएगी? अंधेरे और अभाव के बाद एक पीले सूरज की कामना इसमें व्यक्त की गई है। “मैं सोच रही हूँ कब सूरज उगेगा। जिनेवा की अंतर्राष्ट्रीय इमारतों पर, देश के मेरे पुश्तैनी मकान पर, उन झोंपड़ों पर..इस तूफ़ानी बरसात के बाद क्या बड़ा-सा पीला सूरज होगा?”[4]

सफेद गुड़हल - एक सम्पन्न परिवार की स्त्री और पुरुष की कहानी है। स्त्री पुरुष की व्यस्तता में अपने लिए समय नहीं पाती है। वह सबकुछ देता है लेकिन स्त्री के साथ घूमने चलने का समय नहीं निकाल पाता है। मित्र का परिवार आता है। सब कुछ अच्छे से होता है। सर्दी का मौसम है। वह बाहर चलने के लिए कहता भी है और सर्दी के कारण मना भी करता और फिर चलने के लिए कहता है। उसकी इसी व्यस्तता में स्त्री का मन और उसके सपने टूट जाते हैं। “तुम्हारी आँखों की व्यस्तता में मेरे सपने टूट-टूट जाते हैं।”[5]

तिनके - हेमंत और चंदा दोनों कामकाजी पति-पत्नी हैं। उनके दो बच्चे हैं किशू और शानू। साथ में चंदा की बड़ी बहन भी रहती है। चंदा घर और बाहर के सारे काम करती है लेकिन उसे उसका सम्मान नहीं मिलता है। उसके काम को कमतर समझा जाता है। उसकी बात घर और बाहर कम सुनी जाती है या बिजली वालों की तरह अनसुनी की जाती है। उसके पढ़ाने के काम को उसकी बड़ी बहन तक मटरगश्ती मानती है। दूसरे शहर में उसके जाने को लेकर भी पति जितनी स्वतंत्रता नहीं है। उसके बच्चे तक उसके अकेले जाने को लेकर सहज नहीं हैं। बहुत सूक्ष्म स्तर पर स्त्री-पुरुष मन और जीवन के भेद को इसमें दिखाया गया है। “तुम्हारी टीचिंग तो मटरगश्ती है। कभी दो घंटे में हो गई, कभी तीन में और वापस घर पर आकर पसर जाओ।”[6]

कसक - दो लड़कियों की कहानी है जो स्वभाव से एक दूसरे से विपरीत होते हुए भी अच्छी दोस्त हैं। एक चंचल तो दूसरी गंभीर, एक खेलने में आगे तो दूसरी पढ़ने में आगे। उन दोनों की जिंदगी में बहुत कुछ घटित होता है। पढ़ाई के बाद शादी और अलग-अलग शहरों मे रहने लगती हैं। कभी-कभी मिल भी लेती हैं। और ऐसे ही एक दिन पता चलता है कि हमेशा मस्त रहने वाली सहेली ने तेरहवीं मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर ली।

दरार - कल्पेश अपने घर में है जिसकी छत में दरार है और बरसात का पानी चू रहा है। वह दिनभर काम करता है लेकिन शाम और रात बिताना मुश्किल है। वह शराब पीकर विचार कर रहा है। उसका बैरा खाना लगाकर टीवी देखने अपने अलग कमरे में चला गया है। उस कमरे पर टीन की छत है। वह अपनी पत्नी के साथ आराम से उसमें रहता है। धन और साधन न होने के बाद भी वह खुश है। वहाँ छत और मन में दरार नहीं है इसलिए वहाँ गर्माहट और सुख है। कल्पेश उस कमरे में जाता है तो वे उसे चाय पीने के लिए कहते हैं उनके साथ चाय पीना उसे सुखद लग रहा है। उसका अकेलापन उसे दुखी बना रहा था। अभावग्रस्त जीवन और सम्पन्न जीवन के अंतर के साथ दरार और दुख का भी वर्गीय चित्रण यहाँ किया गया है।

दूसरा - भगीरथ और नीलम सम्पन्न वर्ग के दंपति हैं। उनकी शादी की सालगिरह की आज पार्टी है। इसमें उनके अनेक मित्र आए हुए हैं। शराब और खाने का दौर चल रहा है। इसमें नीलम अपने दोस्तों के साथ खूब आनंद से बात कर रही है। भगीरथ अपने दोस्तों के साथ व्यस्त है। बीच बीच में नीलम और भगीरथ के बीच संवाद होता है। नीलम और भगीरथ के अलग-अलग विवाहेतर संबंध भी संभवतः हैं। दोनों को इसकी जानकारी भी है। पति का संबंध जूही से है तो शायद नीलम का रोशन से। फिर भी पति अपने को अच्छा और पत्नी को दोषपूर्ण मानता है। और भीतर से सबकुछ टूटा होकर भी बाहर अपने संबंध को ठीक दिखाने का दिखावा भी वे करते हैं। इस पार्टी के बाद भी रात भी दोनों में कहासुनी हो लड़ाई होती है। पति पत्नी को नीचा दिखाने और आनंद के क्षणों में भी बदला लेने कि चाह के कारण चोट पहुँचाने की कोशिश करता है। "रोजमर्रा का नकाब ओढ़कर जीवन फिर बाहर निकलेगा।"[7]

हाशिए पर - जर्मनी में रहकर पढ़ाई करने वाली वाचिका और उसका दोस्त रजत जो फ्रांस में रहता है, वे हर पतझड़ 'ऑटम' में मिलते हैं। रजत का परिवार भारत में रहता है, वह फ्रांस में रहकर पढ़ाई कर रहा है। वाचिका और रजत अच्छे दोस्त हैं। विदेश में रहकर पढ़ाई कर रहे हैं। रजत के व्यवहार में मौजूद पुरुषवादी विचार की झलक इस कहानी में कई बार मिलती है। "वह मेरे हाथों से जबरदस्ती 'इंडोलोजी' की मोटी-मोटी किताबें ले लेता और उनके नाम गौर से पढ़कर चिढ़ा देता, "कुछ पल्ले भी पड़ता है?" मुझे यह जुमला हमेशा लड़की से कही लड़के द्वारा बात लगती कि अरे प्यारी-सी, छोटी-सी, बेवकूफ-सी ..गुड़िया.. बच्ची..! पर मैं सत्रह-अट्ठारह की तो रही नहीं कि बात-बात पर बवाल मचा दूँ।"[8]

अनुगूँज - राहुल और मुनिया की कहानी है। राहुल अच्छी कंपनी में बड़ी नौकरी करता है। सुखी और सम्पन्न घर है। मुनिया शिक्षित है और काम करना चाहती है। लेकिन राहुल नहीं चाहता है कि वह काम करे। मुनिया चाहती है कि वह पतली हो लेकिन राहुल को उसका भरा-भरा शरीर पसंद है वह चाहता है वह मोटी रहे। मुनिया दिन भर घर में राहुल के सुख के लिए सभी काम करती है और शाम को सजकर उसका इंतजार करती है। फिर राहुल उसे घुमाने ले जाता है। वह इस स्थिति को अच्छे से समझती है और घर के घेरे में कैद होकर नहीं रहना चाहती है लेकिन प्रेमवश वह अपनी सारी इच्छाएं छोड़ती रहती है। मुनिया पिंजरे वाली मुनिया की घर सुख के घर में कैद है और राहुल के पकवान बनाने और बनने के लिए मजबूर है। "तुम्हें क्या, फुर्सत ही फुर्सत, जीने को, जीतने को। जब चाहे सोओ, जब चाहे उट्ठो। खाओ, पिओ, मौज करो। मेरे लिए पकवान बनाओ, मेरे लिए पकवान बनो।" राहुल ने शरारत से आने दाँत मुनिया की गर्दन में गड़ा दिए।"[9]

चौक - इस कहानी में एक लेखिका अपने लेखन के लिए एकांत और सुकून चाहती है जो उसे घर या बाहर भी नहीं मिल पाता है। इस बड़े घर में माँ, पिता, भाई, भाभी उनके बच्चे, नौकर-चाकर हैं। लेखन के लिए जो शांति चाहिए वह नहीं मिल पाती है। फिर वह अपने एक नए परिचित दोस्त रॉबिन के घर जाकर पढ़ने जाती है। वहाँ भी वह लेखन नहीं कर पाती है। रॉबिन भी भीड़ से भागने वाला व्यक्ति है। उसे भीड़ से नफरत है। वह नदी किनारे एकांत स्थान पर बैठने जाता है। वहीं दोनों लोग बारिश में भीगते हुए बैठे रहते हैं। वह बाद में लेखकों की कार्यशालाओं में भाग लेती है। हर जगह भागती रहती है कहीं भी उसे चैन नहीं मिलता है।

दहलीज़ - एक दोस्त और उसकी पत्नी के साथ वाचक कहीं घूमने आया है। एक निर्जन जंगल में किसी रेस्ट हाउस में रुके हुए हैं। वहाँ बहुत गर्मी और सुंदरता है। वह दोस्त की पत्नी के प्रति आकर्षित होता है। और एक सपना देखता है कि उसके दोस्त की पत्नी आकर उसके बुखार और गर्मी के कारण तप्त होंठों पर अपने शीतल होंठ रख देती है। "तभी मेरे कमरे का दरवाजा धीरे से खुला। मैंने हाथ बढ़ाकर सपने का स्वागत करना चाहा, पर रेशम के धागों में बेबस बँधा था। छाया बढ़ी, मेरे सिरहाने खड़ी हुई। मेरे जलते होंठों पर शीतल होंठ झुके।"[10]

दिशाशूल - अपाला सिंह नामक उपन्यासकार एक दोस्त नैथानी की शादी के जलसे में आई हुई है। वह अपनी दोस्त गुरप्रीत के साथ पुरुषों के बारे में उन्मुक्त होकर बातें कर रही हैं। अनेक लोग अपाला के लेखन को अश्लील मानते हैं। उसे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। वह अपने नए उपन्यास दिशाशूल को छपवाने का प्रयास कर रही है। वह इस महफ़िल में मिथिलेश प्रवीण के प्रति काफी आकर्षित है। उसके होंठों की तारीफ अपनी दोस्त से करती है। मिलने का वांछित संयोग भी बन जाता है। होटल सागर के किनारे है तो वे लोग सागर की लहरों के साथ कुछ दूर तक साथ रहते हैं। काफी पास आते हैं, तभी अपाला मिथिलेश प्रवीण को रोक देती है और फिर अपनी दोस्त गुरप्रीत से मिलने पर कहती है कि काम बन गया। मिलने का काम बन गया या किताब छपवाने का काम बन गया? यह स्पष्ट नहीं है। स्त्री यौनिकता की तरफ इस कहानी में लिखा गया है। "सो सैक्सी।" "साँड जैसा। तैरने आता है तो मर्दानापन यों चुआता है कि जैसे पानी हो।" "क्या बात करती हो? उसकी टांगों पर तो असल फिदाई है मेरी।" "घोड़े की रानों जैसी।" "तो तुम्हीं बता दो क्या सैक्सी है?" "जो किसी अनसैक्सी अदा में अचानक झाँकनेवाला सैक्सीपन हो..."[11]

पंख - कहानी की वाचिका और उसका दोस्त रवि काम के बाद लंच में एक रेस्टरेन्ट में मिलते हैं। हर रोज उसी रेस्टोरेंट में मिलते हैं। यहाँ भी काम चलता रहता है। वहीं वाचिका को एक लड़का-लड़की दिखते हैं। वे दोनों एक दिन पहले बस अड्डे पर पहली बार मिलते दिखते थे। अब वे रोज मिलने लगे। उन्हें लगातार देखने की कहानी है।

नाम - एक स्त्री जंगल विभाग में अपने काम के सिलसिले में घर से दूर कहीं रुकती है और फिर काम खत्म करके अपने घर आती है। जहां पर रुकती है वहीं पर उसका प्रेमी भी उसके साथ रुकता है। साथ में सोते हुए उस स्त्री ने शायद अनजाने ही अपने पति का नाम पुकारा। जिसे शायद उसके प्रेमी ने भी सुन लिया। उसने पूछा कि क्या उसे उसकी याद आ रही है? वह सोचती है कि वह तो पूरी तरह से वहीं है। "मैं चाहकर भी जवाब नहीं दे पाई कि पंद्रह साल से होंठों पर चढ़ा बस एक शब्द है वह नाम, यों इसलिए मेरे मुँह से निकल गया। मैं तो यहीं हूँ, सोती-जागती, तुम्हारे संग, पूरी तरह तुम्हारे पास।"[12]

भीतराग - गिरधारीजी बूढ़े हैं और अपने बेटे-बहु और उनके दो बच्चों के साथ रहते हैं। उन्हें दुष्चिन्ता और नींद न आने की बीमारी है। ऐसे में एक दिन उनके गाँव से मित्र बचवा ठाकुर आते हैं। उनके साथ ही रुकते हैं। वे इतनी उम्र में भी निश्चिंत और हृष्ट-पुष्ट हैं। आराम से सोते हैं और जो मन में आए वह करते-खाते हैं। वहीं गिरधारीजी मृत्यु और बीमारी के भय के कारण पहले ही से अधमरे हैं। अपने जीवन को मर-मरकर जीते हैं।

मैरी-गो-राउन्ड - सेवानिवृत्त अधिकारी उपेन्द्रनाथ सिरोही अपने पुराने रंग-ढंग के चले जाने से पत्नी के साथ बेरौनक जिंदगी बिता रहे हैं। बेटा और बहू दूर राँची में रहते हैं। वे अभी भी अपनी अफ़सरी से रौब को

पाने की कोशिश करते रहते हैं। बेटे के आने पर एक होटल में खाना खाने जाते हैं। वहाँ पर वे अपनी ठसक और आदर्श दिखाते हुए दूसरे लोगों को नीचा दिखाते हैं। बाद में खुद सोचते हैं कि शायद में अब ज्यादा टची हो गए हैं।

अरे गोपीनाथ - गोपीनाथ नेता बनने की ओर समाज सुधारक जैसा दोस्त है जो अपना ध्यान नहीं रखता है। बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाता है और कभी पूरी नहीं कर पाता है। उसका दोस्त कहानी का वाचक उसे अपने आलीशान घर में आराम करने के लिए बोल आता है वह गोपी का पुराना दोस्त है इसलिए उसे उस कमरे को छोड़ अपने घर पर आने के लिए कहता है। गोपीनाथ के साथ एक दिन घूमते हुए उसने एक औरत को उसके पति से पिटने से बचाया। वह औरत भी उस अनेक औरतों की तरह है जो इसी अत्याचार को अपनी नियति मान लेती है।

पिलाकी माने फय - एक लेखक जो अपने पैसे कमाने के लिए एक पत्रिका में कहानी भेजना और मानदेय लेना चाहता है। लेकिन कहानी लिखने से पहले संपादक से आश्वासन पाना चाहता है कि कहानी जरूर छप जाएगी। वे हर समय पैसे बचाने की सोचते हैं। मक्खीचूस व्यवहार करते हैं। उनकी पत्नी भी उसी तरह का व्यवहार करती हैं। राजू उनका दोस्त है। एक दिन वह अपनी पत्नी के साथ इनके घर खाने अपर आते हैं। पत्नी पुराने दूध के पाउडर से कुछ बनाती है लेकिन जब उसे पता चलता है कि राजू की पत्नी गर्भवती है तो वह दिल खोलकर बहुत उदार होकर खर्च करती है और अपने पति को डाँटती भी है कि इस समय क्या इन्हें पुराने एक्स्पाइरी दूध की मिठाई खिलाएंगे?

रिश्ता - एक पड़ोसी जयंती भाई से नए बने संबंध की हास्यपरक कहानी है। जिनसे सत्रह साल से बातचीत या कोई संबंध नहीं था, पास में ही रहते थे। एक दिन उनसे बातचीत होने लगी। पाँच दिन बाद उन्हें अपने बेटे के पास अमेरिका जाना है। फिर उनसे मिलने और चले जाने की कहानी है। उन्होंने पत्नी को बेन कह दिया तो वे बेटी के मामा भी बन गए।

भार - स्त्री के मोटापे को उसका परिवार, पति और बेटे कैसे एक बड़े अपराध की तरह उस पर थोप देते हैं, इसकी यह कहानी है। कहानी की वाचिका की चाची का शरीर थोड़ा स्थूल हो गया है। इसका कारण बाद में मालूम चलता है कि उन्हें थॉइरॉड की बीमारी है, जिसके कारण उनका वजन बढ़ रहा है। उनके पति और बेटे का व्यवहार बहुत अमानवीय और यातनादायक है लेकिन तरीका मजाक करने वाला है। इस मजाक से उनके जीवन और मन पर क्या असर होगा इसकी उनको चिंता नहीं है। यह भी एक प्रकार का स्त्री-शोषण जिसके बारे में यह कहानी बताती है।

जड़ें - एक औरत जो प्रकृति का प्रतीक लगती है। वह वाचिका के घर के पास बाहर बैठी दिखती है। उसके घर के बाहर नीम का पेड़ है। उस पेड़ की जड़ों से लोगों ने कहा कि उनके घर की नीवें कमजोर हो रही हैं। लोगों के उस पेड़ को काटने के लिए म्यूनिसपैलिटी वालों को बुलाया है। वाचिका उस पेड़ को बचाने की काफी कोशिश करती है। लेकिन लोगों के कहने पर उस पेड़ को कटवा दिया गया। बाद में वह बूढ़ी औरत वाचिका के घर में बैठी मिलती है।

वे तीन - तीन सहेलियों की कहानी है- सबीना, राधू और प्रीथा की। सबीना के घर राधू पहली बार आई है। वह नाटक में एक्टिंग करती है। प्रीथा के साथ सबीना अमरीका गई थी लेकिन वह अकेले छह महीने में

लौट आई। न्यूयॉर्क में प्रीथा की मृत्यु हो गई। तीनों की दोस्ती टूट सी गई है। सबीना का घर काफी सुंदर और सम्पन्न है। उसका एक बेटा है जिसका नाम विभु है। राधू और सबीना में बोलचाल न के बराबर है।

शांति-पाठ - एक पुस्तकालय जैसे इंस्टिट्यूट में साथ में पढ़ने वाले एक व्यक्ति के घर से उसकी पत्नी की जली और नंगी लाश निकली। सभी लोग इस बारे में न जाने क्या-क्या सोच और बोल रहे हैं। पुलिस वालों के साथ उनकी न जाने क्या बात हुई। अब वे एक साथ एक की कमरे में पढ़ने के लिए आकर बैठे हैं। उनकी उपस्थिति डर भी पैदा कर रही है। वे अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे रुलाई सुनाई दे रही है। उनकी गोद में उनकी पत्नी की आत्मा की शांति के लिए शांति-पाठ के पर्चे रखे हैं।

वैराग्य - अहंकारी प्रेमी जयंत और वाचिका की कहानी है। इसमें वाचिका अपनी दीदी को याद करके उनसे बातें कर रही है। उसकी दीदी की कैंसर से मृत्यु हो चुकी है। बचपन में साथ में बिताए दिनों की बातें और जयंत के स्वभाव के बारे में विचार करती है। वह अपनी दीदी से कह देना चाहती है कि “मेरा जी होता है कहूँ, नहीं, जयंत ‘पस्त होना’ औरत नहीं, न पस्त-कर-दिया समझना आदमी है।”[13]

यहाँ हाथी रहते थे - दंगे के कारण शहर के दो हिस्से हो गए हैं। एक नदी के इस पार और दूसरा नदी के उस पर। वाचक एक बहुत पुरानी बिल्डिंग में काम करता है। उस बिल्डिंग के पास एक बुढ़िया कभी-कभी दिखाई देती है। उस बिल्डिंग और कंपनी के मालिक उसे तुड़वाकर नई बिल्डिंग बनवाना चाहते हैं लेकिन उनके पिता ऐसा नहीं करने देने हैं। पिता के मरने के तुरंत बाद बिल्डिंग तुड़वाकर नई बिल्डिंग बनने लगती है। एक दिन मालूम चलता है कि यह बिल्डिंग उस बुढ़िया की थी और उसके पति के यहाँ इस बिल्डिंग और कंपनी के मालिक के पिता काम करते हैं। दंगों के समय उन्होंने बुढ़िया के पति और परिवार को बचाया लेकिन जब दंगे ज्यादा तेज हो गए तो वे बिल्डिंग छोड़कर इसे बेचकर चले गए। कभी यहाँ हाथी भी रहते हैं। पुराने को मिटाकर नए समाज और नई बिल्डिंग बनने लगी हैं। दंगों ने भी समाज को बदल दिया है।

आजकल - एक घर में एक आदमी बैठा हुआ है। दंगे का माहौल है। अफवाह है कि कल उस घर और उस आदमी को आग लगा देंगे। तभी घर में चुपके से कोई आता है। वह इसी घर में काम करता था। उसने अपने पैसे इस घर में छिपाए हुए हैं। घर का मालिक बचपन के दिनों और हिंदू-मुसलमान के सद्भाव के बारे में सोचता है। अब स्थिति बदल गई है। वह चुपके से आए और पैसे का बैग ले जाते आदमी को जाते देखता है।

इति - एक ऐसे पिता की कहानी जो अपनी मनमानी करते हैं। पत्नी, बेटी और नौकरानी सब पर हुकुम चलाते हैं। नौकरानी को पैसे देकर उसके साथ कुछ गलत करना चाहते हैं। बाहर लड़कियों और औरतों पर भी बुरी नज़र रखते हैं। अपनी छोटी बेटी के साथ पति-पत्नी दोनों रहते हैं। बेटा पेंशन के पैसे साइन करवा कर ले लेता है। बेटियाँ ख्याल रखती हैं। लेकिन उन्हें उनकी पेंशन का लाभ नहीं मिलता है। पत्नी भी उनके स्वभाव के दुखी रहती है और सहती है। उनकी एक दिन मृत्यु हो जाती है। उनकी मृत्यु के पत्नी अब मुक्त महसूस करती है।

मैंने अपने आप को भागते हुए देखा - एक पोता अपने बड़े बाबा के स्वभाव, रुतबे, कार्यशैली, दबंगई, सांपों को पकड़ लेने के कौशल को देखता है। उनसे डरता और नापसंद जैसा करता है। उनके डर के कारण घर

के माहौल को बदला हुआ देखता है। लेकिन उनके मरने के बाद कुछ कुछ वैसा ही होते जाने को भी महसूस करता है। अपनी कमजोरी और उनकी मजबूती के बावजूद सांपों के प्रति उनके स्वभाव को कुछ अपनाने लगता है।

चकरघिन्नी - किसी शहरी सोसाइटी के अंदर एक औरत तेज कदमों से कई चक्कर काटती है। उसमें सेमल का एक पेड़ है। किनारे पर छोटे पेड़-पौधे हैं। वहाँ लोग उसके विचारों को कम पसंद करते हैं। वह प्रकृति और प्राकृतिक जरूरतों के पक्ष में बोलती है। जो लोग और विशेषकर काम करते आस पास आती हैं उनके लिए शौचालय की भी व्यवस्था नहीं है। वे वहीं झाड़ियों के पीछे ऐसा करने को मजबूर हैं।

तितलियाँ - केरल के एक बहुत ही सुंदर क्षेत्र में एक लेखिका अपने आस पास छोटी-छोटी लड़कियों को देखकर सुखी-दुखी दोनों हो रही है। वे लड़कियों तितलियों की तरह लगती हैं। वे यहाँ नर्स बनने के लिए आई हैं। साथ ही दूसरे राज्यों से आए लोगों की सहायता करके कुछ पैसे कमाती हैं। वे बहुत तेरह-चौदह साल की हैं। बरसात में नारियल के पेड़ों के पास इठलाती भाग रही हैं। लेखिका उनको प्यार और स्नेह से भरे गुस्से में वहाँ से किसी सुरक्षित स्थान पर जाने के लिए कहती है।

इतना आसमान - विदेश में एक कान्वर्सैशन में एक स्त्री भाग लेने गई है। वहाँ का आसमान वह देखती है। खुला और बड़ा आसमान। वहीं बातचीत में झील के भीतर परमाणु संबंधी चीजें रखने की बात भी चल रही है।

लौटती आहट - अखबार के लिए पुरुष समाज की दावेदारी और स्त्रियों को पढ़ने का हक नहीं है, इस बारे में कहानी। एक स्त्री और पुरुष पुराने मित्र-प्रेमी है। दोनों अलग रहते हैं। बहुत दिनों बाद कहीं मिले हैं। स्त्री बाथरूम से अखबार लेकर कमरे में आती है तो आदमी को लगता है कि तुम क्यों अखबार ले गई थीं। पुरुषवादी सोच पर कहानी। "वैसे मुझे कभी समझ नहीं आई आदमियों की यह अखबार-परस्ती। कोई भी आदमी। मेरे बाप, मेरे चाचा-ताऊ, मेरे जीजा बहनोई, मेरे कोई भी आदमी। बाप के लिए वह - अखबार– जैसे बच्चे के लिए स्तन। सुबह हुई नहीं कि हाजिर हो–चाय केला बिस्कुट अखबार। ट्रे में पेश बतौर छोटा हाजिरी, साहबों नवाबों की खिदमत में।"[14]

मार्च, माँ और साकुरा - सत्तर साल की माँ हिंदुस्तान से अकेले जापान आई है। उसका बेटा तोक्यो में काम करता है। अभी साकुरा का मौसम आने वाला है। माँ रोज ही पेड़ पर साकुरा के खिलने का इंतजार करती है। बसंत आने के दिनों में माँ भी बच्ची बन जाती हैं। वे नए परिचित जापानी युवकों के साथ अकेले ही बिना जापानी जाने निकल पड़ती हैं। लड़का इस पर खीजता है कि माँ इन लड़कों से क्यों मिलती हैं। उनको हल्की चपत क्यों लगाती हैं। माँ जब साकुरा देखने बेटे के साथ जाती है तो पूरा जापान मानों साकुरा के सागर में तैरने लगा है। माँ कल्पना करती है कि काश वह उस होटल में रहती होती तो हमेशा साकुरा को देख पाती। उसी समय माँ मानों उसी होटल में पहुँचकर यहाँ साकुरा को देख रही है। यह मार्च महीने की घटना है।

बुलडोज़र - एक बच्ची है जिसे गुड़ियाँ नहीं गाड़ियाँ पसंद है। वह अपने पिताजी से खिलौने मँगवाती है। पिताजी लाते भी हैं। वह एक बुलडोजर मँगवाती है। लेकिन वह उसे नहीं मिल पाता है। रोज पिताजी भूल जाते हैं। वह इस समय जापान आई हुई है। दोबारा जापान आई है। पति कुमार और बेटी चिया के साथ

शिनकान्सेन ट्रेन में बैठी है। उसको कोई बीमारी है जिसका ऑपरेशन जापान में होना है। ट्रेन में रास्ते में फुजीसान नामक जापान का सबसे बड़ा पहाड़ दिखाई देगा। उसका वह इंतजार कर रही है। कुमार से बीयर पी लेने का आग्रह करती है। लेकिन कुमार बीयर नहीं पीता है। वैसे ही जैसे उसके पिता बुलडोजर नहीं ल सके वैसे ही कुमार ने बीयर नहीं पी केवल वादा किया कि जब वह ठीक हो जाएगी तब बीयर पियूँगा।

थकान - जापान के एक कब्रिस्तान पर प्लम के फूल खिले हैं। वहाँ एक स्त्री दूसरी स्त्री के साथ आई हुई है। वहीं एक और स्त्री एक कब्र के सामने बैठी हुई है। यहाँ पर मिलना दोबारा कब होगा मालूम नहीं। फिर दोबारा फोन करना, मिलने का इंतजाम और इंतजार करना होगा। एक थकान इसमें भरी हुई है। जापानी जीवन शैली की कुछ झलक भी मिलती है।

माई - इस उपन्यास के केंद्र में माँ है। जिसे उसकी बेटी और बेटा उस घर की चारदीवारी से बाहर निकालना चाहते हैं। उस घर में वह सिर्फ एक मशीन की तरह दिनरात काम करती रहती है। कोई सुख और सम्मान वहाँ नहीं है। पिता और दादा और दादी भी माँ के लिए हमेशा काम तैयार रखते हैं। वह दिनरात खटती रहती है। बेटी और बेटा पढ़कर किसी तरह इस घर के नियमों को बदलने और तोड़ने लगे हैं। माँ भी कुछ हद तक बाहर निकलकर किसी कार्यक्रम में चली जाती है। लेकिन घर के खराब नियमों का विरोध नहीं कर पाती है। घर एक कैद है। उससे बेटी खुद पहले निकलती है फिर माँ को निकालना चाहती है। बेटा पढ़कर विदेश चला जाता है। पिता और घर के नियम बेटी को भी घर की चार दीवारी तक कुछ हद तक सीमित करने की कोशिश करते हैं। लेकिन माँ बेटी और बेटे के आगे बढ़ने के लिए सब कुछ करती है। उस सम्पन्न परिवार में माँ को कितना शोषण सहना पड़ता है यह माँ और बेटी ही समझते हैं। माँ के परिवार से उसका कोई संबंध पिता और दादा को पसंद नहीं है। माँ के पूर्व जीवन की कोई झलक किसी को नहीं मिलती है। बेटी को बाद में यह सब मालूम चलता है। पिता के देहांत के बाद माँ के जीवन का पिछला हिस्सा बच्चों को पता चलता है। माँ के रूप में भारतीय स्त्री के जीवन में घर रूपी कैद यहाँ दिखाई गई है। संपन्नता में भी स्त्री को दुख और कष्ट ही मिलते हैं।

हमारा शहर उस बरस - इस उपन्यास में दद्दू, हनीफ़, श्रुति और शरद केंद्र में हैं। शहर में दंगे हो रहे हैं। श्रुति लेखक है। वह इस दौर और दंगे में शहर की कहानी लिखना चाहती है। उसका पति हनीफ़ विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर है। शरद हनीफ़ का बचपन का दोस्त है। दद्दू शरद के पिता हैं। सब लोग एक ही घर में दद्दू के साथ रहते हैं। श्रुति और हनीफ़ उस घर की दूसरी मंजिल पर रहते हैं। विश्वविद्यालय में प्रोफेसर नंदन, छोटे जोश, उर्मिला अध्यापक हैं। कापड़िया पुलिस अधिकारी है। बेवरली विदेशी शोध कर्ता है वह शरद से प्रेम करती है। एक मठ है जो धीरे धीरे पूरे शहर के माहौल को तनावग्रस्त करता जा रहा है। मुस्लिम समुदाय के कुछ लोग भी इस माहौल में बदले से भावना से भर जाते हैं। हनीफ़ सबके साथ मिलकर इन दंगों रोकने के लिए रिपोर्ट लिखता है और भाषण देता है। लेकिन माहौल हिन्दू और मुस्लिम में इतना बट चुका है कि उसकी बातचीत उसके दोस्त शरद से भी बंद हो जाती है। वह भी कट्टर लोगों के साथ जाने लगता है। दद्दू इन स्थितियों को बहुत रोचक ढंग से समझाने की कोशिश करते हैं कि हिन्दू-मुसलमान एक साथ रहते-लड़ते हुए भी दंगाई नहीं बनते थे। अब तुम लोग ज्यादा नाजुकमिजाज हो गए हो। विद्यार्थी में दंगाई बन रहे हैं। बाद में दंगों को श्रुति, हनीफ़, दद्दू, शरद सब बढ़ता हुआ देखते हैं।

खाली जगह - इस उपन्यास में दंगे नहीं लेकिन बम का धमाका है। उसका कारण ओझल है। और उपन्यास के अंत में भी बम फटता है। पहले वाले बम धमाके में एक अठारह साल का लड़का भी मरा है। कुल उन्नीस लोग मरे हैं। लेकिन किसी जादू की तरह एक तीन साल का लड़का वहीं पर मिला जिसे कोई बाहरी चोट नहीं लगी। लेकिन मन में गहरी चोट लगी है। वह बोलता नहीं है। अठारह साल के लड़के के माँ पिताजी उस तीन साल के लड़के को अपने शहर अपने घर ले आते हैं। वह छोटा बच्चा अब बड़े लड़के की जिंदगी को दोबारा जीता है। धीरे-धीरे अठारह साल तक पहुँचता है। माँ बहुत प्यार करती है। पिता कुछ कटे-कटे से रहते हैं। उसकी जिंदगी में एक लड़की आती है। वह उसे प्यार करती है। लड़का खुश होता है कि अब तक वह उस बड़े लड़के की जिंदगी ही दोहरा रहा था लेकिन इस लड़की के आने से उसे कुछ नयापन अपनी जिंदगी में लगता है। लेकिन बाद में मालूम चलता है कि यह लड़की उस बड़े लड़के की मित्र थी। दोनों के बीच वैसा ही संबंध था जैसा इस लड़के के साथ है। इस सत्य को जानकर वह छोटा लड़का आहत महसूस करता है। यहाँ उसका पुरुष मन दिखाया गया है। विश्वविद्यालय जैसी सुरक्षित जगह पर दो बार बम का फटना भी अनोखे रूप में यहाँ दिखाया गया है। इस दूसरे बम धमाके में वह लड़की मर जाती है।

तिरोहित - इस उपन्यास के केंद्र में ललना नामक एक औरत है। जिसका पति उसे छोड़ जाता है। लेबरनम नामक हाउस के पास प्रेमानन्द नामक व्यक्ति ललना को सहारा देते हैं। लेकिन जब ललना उनके भतीजे से प्रेम करने लगती है तो उसे घर से निकाल देते हैं। फिर ललना को चच्चो सहारा देती हैं अपनी जिंदगी में शामिल कर लेती हैं। इतना शामिल हो जाती है कि वह चच्चो के पति के बच्चे की माँ बन जाती है। उससे एक बेटा होता है। जिसे ललना बिटवा कहती है। वह लड़का ललना से बात नहीं करता है। अपने चच्चो को चाची कहता है और उनके पति को चाचा। चच्चो और ललना की घनिष्ट दोस्ती के साथ स्त्री यौनिकता को भी इसमें दिखाया गया है। पति सिर्फ सामानों से पत्नी को खुश करना चाहता है। वह पत्नी को समय देने की जगह हाँगकाँग से सामान लेकर आता है। ललना चच्चो को प्रेम और एकाकीपन में सहारा देती है। बेटा भी अपनी चाची और वास्तविक माँ के मन की स्थिति नहीं समझता है। समाज जिन्हें गलत मानता है वे अपने तरीके से चलने वाली स्त्रियाँ हैं। उनके मन और जीवन को प्रेम और बारीकी से इसमें चित्रित किया गया है।

रेत-समाधि - इस उपन्यास के केंद्र में भी एक माँ है। जिसका पति अभी मर चुका है। वह बेटे एक साथ उसके बड़े घर और परिवार में रहती है। एक बेटी भी है जो अकेली है और कहीं और रहती है। जब से पति का देहांत हुआ है उसके बाद से माँ एक बिस्तर पर लेती रहती है। उसने घर की ओर पीठ कर ली है। दीवार की तरफ मुँह करके लेटी रहती है। ऐसा लगता है मानों वह दीवार के भीतर चली जाना चाहती है। जीवन के प्रति मोह उसने मानों छोड़ दिया है। घर के सदस्य और नौकर चाकर उनके खाने-पीने और जीने को लेकर चिंतित दिखते हैं। ऐसे में एक दिन वह माँ कहीं गायब हो जाती हैं। उसका पोता सिद्धार्थ जिसे सब लोग सिड कहते हैं वह एक छड़ी लेकर आता है। दादी उसी के कहने से थोड़ा बहुत हिलती-डुलती हैं। गायब होने के कई घंटों बाद वे मिलती हैं। बाद में बेटी उन्हें अपने साथ अपने घर ले जाती है। बेटी का जीवन अलग ढंग का है। वे वहाँ खुश रहती हैं। अब उनकी हालत ठीक होने लगती है। वहीं पर उसके दोस्त आते हैं। माँ उन सबके साथ घुलती मिलती है। वहीं पर एक किन्नर रोज़ी आती है। जो माँ की दोस्त है। वहीं पर एक दर्जी भी आता है जो रोज़ी की तरह दिखाई देता है। बाद में रोज़ी की कोई हत्या कर देता है।

रोज़ी के कारण माँ और बेटी कुछ सामान लेकर पाकिस्तान जाते हैं। पाकिस्तान जाने पर एक नई कहानी शुरू हो जाती है। माँ का बचपन यहाँ बीता था। यहीं पर उसकी शादी भी हो चुकी थी। और भारत-पाकिस्तान के बँटवारे के बाद वह भारत आ जाती है। वह अब अपने पुराने जीवन में लौटना चाहती है। वह अपने पति अनवर को खोज रही है। बेटी के लिए भी यह एक नई दुनिया है। अनवर उस औरत की बचपन की मुस्लिम सहेली का भाई था। अब अनवर काफी बीमार अपने कमरे में बिस्तर पर मिलता है। जिसे देखकर माँ और बेटी आ रहे हैं। तभी पुलिस वाले उस औरत को गोली मार देते हैं। स्त्री का जीवन, और प्रेम और हिन्दू-मुस्लिम सद्भाव और बंटवारे की कहानी एक साथ यहाँ दिखाई गई है।

हिन्दू-मुस्लिम सद्भाव और सांप्रदायिकता

हिन्दू और मुसलमानों के बीच शुरुआती टकराव और फिर सद्भाव का इतिहास कहीं ज्यादा पुराना है। एक हजार साल से ज्यादा समय से दोनों धर्म के लोग एक साथ रह रहे हैं। उनमें कबीर के समय भी कुछ तनाव अवश्य था, इसलिए उनकी कविता में दोनों धर्मों के लोगों के लिए सीख दी गई है। हिन्दू-तुर्क के बीच लड़ाई का जिक्र जायसी ने अपने पद्मावत में भी किया है। दोनों धर्मों के बीच ही नहीं अन्य धर्मों के बीच सद्भाव का इतिहास अधिक प्राचीन है। ब्रिटिश शासन के दौरान के विचार के रूप में सांप्रदायिकता का जन्म हुआ। उन्होंने हिन्दू-मुसलमानों में विद्यमान तनाव की स्थिति को देखा और उसका राजनीतिक लाभ लिया। "आधुनिक भारत में सांप्रदायिकता के विकास के लिए खास तौर पर अंग्रेजी साम्राज्य की 'फूट डालो और राज करो' की नीति जिम्मेदार है, हालाँकि जैसा कि हमने बार-बार कहा है, ब्रिटिश नीति को सफलता हमारी आंतरिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों के कारण ही मिली।"[15] वर्तमान समय में भारत जिस समस्या से सबसे ज्यादा प्रभावित है, वह सांप्रदायिकता है। "सांप्रदायिकता एक ऐसी नकारात्मक विचारधारा है जो विभिन्न धर्मों-संप्रदायों के मध्य परस्पर वैमनस्य का सृजन करती है। इसके लिए कभी धर्म की, तो कभी संस्कृति की, तो कभी राष्ट्र की अवधारणाओं का प्रक्षिप्त संश्लेषण भी करती है।"[16]

स्त्री शोषण पर कुछ विचार

प्रसिद्ध स्त्रीवादी चिंतक सिमोन द बोउवा ने लिखा है कि "किसी समाज सुधारक या मसीहा द्वारा स्त्री की मुक्ति का मार्ग नहीं निकलेगा। वह जब भी निकलेगा स्त्री के अपने संघर्षों से ही होकर निकलेगा। यह संघर्ष प्रारंभ होगा अपने अस्तित्व बोध से।"[17] और उनका सर्वाधिक प्रसिद्ध कथन भी यहाँ उल्लेखनीय है- "स्त्री पैदा नहीं होती बनाई जाती है।"[18] भारतीय समाज में स्त्री को किस तरह से गढ़ा और निर्मित किया जाता है वह इन पंक्तियों में भी दिखता है। महादेवी वर्मा ने शृंखला की कड़ियाँ शीर्षक पुस्तक में स्त्री की स्थिति के कारणों पर बड़ी गहराई से विचार किया। किन कारणों से उसका शोषण होता रहा है, इसका विस्तृत विवेचन वे करती हैं। वे लिखती हैं "आज हिन्दू स्त्री का भी शव के समान ही निस्पंद है। संस्कारों ने उसे पक्षाघात के रोगी के समान जड़ कर दिया है, अतः अपने सुख-दुख को चेष्टा के द्वारा प्रकट करने में भी वह असमर्थ है।"[19] वे स्त्री जीवन में प्रचलित पुराने शोषण चक्र के आज तक चलने की बात के बारे में लिखती हैं- "युगों के अनवरत प्रवाह में बड़े-बड़े साम्राज्य बह गए, संस्कृतियाँ लुप्त हो गईं, जातियाँ मिट गईं, संसार में अनेक असंभव परिवर्तन संभव हो गए, परंतु भारतीय स्त्रियों के ललाट में विधि की वज्रलेखनी से अंकित अदृश्य-लिपि नहीं धुल सकी। आज भी जब सारा गतिशील संसार निरंतर परिवर्तन की अनिवार्यता

प्रमाणित कर रहा है, स्त्रियों के जीवन को काट-छाँट कर उसी साँचे के बराबर बनाने का प्रयत्न हो रहा है जो प्राचीनतम युग में ढाला गया था।"[20] स्त्री को जन्म से मृत्यु तक दो या तीन घरों में केवल घरों तक सीमित करने की कोशिश पुरुषसत्तात्मक समाज में की जाती रही है। इसके बारे में महादेवी वर्मा ने लिखा है - "हममें से अधिकांश को यह भी ज्ञान नहीं कि गृह की दीवारों के बाहर भी हमारा कार्यक्षेत्र हो सकता है तथा उस क्षेत्र में और अपनी गृहस्थी में उपयोगी बने रहने के लिए हमें कुछ विशेष अधिकारों की और सुविधाओं की आवश्यकता पड़ती है।"[21] स्त्री को भी सहानुभूति और स्नेह की आवश्यकता होती है, इसके बारे में पुरुष समाज में कुछ बदलाव तो भले आया है लेकिन स्थिति बहुत सुधरी नहीं है। इस संबंध मे महादेवी वर्मा लिखती हैं- "स्त्री के हृदय है या उसकी इच्छा-अनिच्छा भी हो सकती है, यह आदिम युग के पुरुष की सहज बुद्धि से परे था, परंतु जैसे जैसे मानव-जाति पशुत्व की परिधि से बाहर आती गई, स्त्री की स्थिति में कुछ अंतर पड़ता गया।"[22] लेकिन यह अंतर बहुत अधिक नहीं पड़ा है। इसकी बानगी हिन्दी साहित्य और समाज में आप देख सकते हैं।

गीतांजलि श्री के साहित्य का सांप्रदायिक सद्भाव और स्त्री और अन्य विषयों के अनुसार वर्गीकरण

कहानी/उपन्यास का नाम	प्रकाशन वर्ष (कहानियों के प्रकाशन-वर्ष संग्रह के अनुसार दिए गए हैं।)	केन्द्रीय विषय सांप्रदायिक सद्भाव	केन्द्रीय विषय स्त्री	केन्द्रीय विषय कुछ अन्य
प्राइवेट लाइफ	1991		हाँ	
बेल-पत्र	1991	हाँ	हाँ	
पीला सूरज	1991			दलित/श्रमिक वर्ग
सफेद गुड़हल	1991		हाँ	
तिनके	1991		हाँ	
कसक	1991		हाँ	
दरार	1991			अकेलापन
दूसरा	1991		हाँ	
हाशिए पर	1991		हाँ	
अनुगूँज	1991		हाँ	
चौक	1999		हाँ	
दहलीज	1999		हाँ	
दिशाशूल	1999		हाँ	
पंख	1999		हाँ	
नाम	1999		हाँ	
भीतराग	1999			मृत्यु का अकारण भय

मैरी-गो-राउन्ड	1999			दिखावा, पुरुष समाज की मानसिकता
अरे गोपीनाथ	1999		हाँ	
पिलाकी माने फय	1999		हाँ	
रिश्ता	1999			पड़ोसी से संबंध
भार	1999		हाँ	
जड़ें	1999		हाँ	प्रकृति
वे तीन	1999		हाँ	
शांति-पाठ	1999		हाँ	
वैराग्य	1999		हाँ	
आजकल	2008	हाँ		
मार्च, माँ और साकुरा	2008		हाँ	
चकरघिन्नी	2008		हाँ	
लौटती आहट	2008		हाँ	
इति	2008		हाँ	
यहाँ हाथी रहते थे	2012	हाँ		
मैंने अपने आप को भागते हुए देखा	2012		हाँ	पुरुष समाज की मानसिकता
तितलियाँ	2012		हाँ	
इतना आसमान	2012			प्रकृति
बुलडोजर	2012		हाँ	
थकान	2012		हाँ	
माई	1993		हाँ	
हमारा शहर उस बरस	1998	हाँ	हाँ	
खाली जगह	2006	हाँ	हाँ	
तिरोहित	2007		हाँ	
रेत-समाधि	2018	हाँ	हाँ	

गीतांजलि श्री के लेखन में इस तरह से देखें तो केन्द्रीय विषय स्त्री विषयक चिंताएं हैं। इकतालीस रचनाओं में से 32 का विषय स्त्री जीवन से संबंधित है। और सात ऐसी रचनाएं हैं जिनका विषय सांप्रदायिकता से जरूर जुड़ता है और उनमें स्त्री जीवन की चिंता भी व्याप्त है। कुल 6 ऐसी रचनाएं हैं जिनका विषय प्रकृति, दलित या श्रमिक वर्ग, पुरुष समाज का अहंकार और पैसे या पद का दिखावा है।

स्त्री-जीवन पर लिखते हुए गीतांजलि श्री की मुख्य चिंताएं क्या रहती हैं? इसके बारे में कुछ बातें जानना बेहतर होगा। सबसे पहली कहानी और नवीनतम उपन्यास पर एक साथ विचार करें तो पाएंगे कि स्त्री के

जीवन का अपना कोना होना है। उसका अपना एक निजी स्थान होता है। जिसे 'प्राइवेट लाइफ' कहानी की नायिका अपने माँ-पिताजी और मकान मालिक और पुरुष समाज से छीनना चाहती है। छीनना इसलिए कि वे इसे स्वेच्छा से नहीं देना चाहते हैं। अगर बेटी अलग घर में अपने हिसाब से रहने लगती है तो पिता उसे वेश्या तक कह देते हैं। उसे चप्पल उठाकर मारते हैं। वहीं 'रेत-समाधि' में अम्मा की जिंदगी के उस कोने की कहानी उपन्यास के अंतिम हिस्से में खुलती है जिसे उन्होंने भारत में शादी से पहले पाकिस्तान में जिया था। अम्मा उर्फ चंद्रप्रभा देवी और अनवर अली की कहानी उसी प्राइवेट लाइफ की कहानी है जो कोई समझना नहीं चाहता है या जिसकी इजाजत समाज नहीं देता है।

इसके साथ दूसरी स्थिति जो कई कहानियों में मिलती है वह है स्त्री के प्रति सूक्ष्म स्तर पर उसे नीचा देखने-दिखाने का भाव। जब स्त्री की शिक्षा की बात हो या अखबार पढ़ने की, वहाँ पुरुष उसे अपने से कमतर साबित करता है।

स्त्री का जीवन पुरुष की इच्छाओं की पूर्ति क्यों हो? इस संबंध में तो माई, तिरोहित उपन्यास से लेकर अनुगूँज कहानी तक में देखी जा सकती है।

गीतांजलि श्री की स्त्रियाँ अपने निर्णय लेने और अपने तरीके से जीवन जीने की सीख स्त्री समाज को देती हैं। जिस जीवन-शैली को पुरुष समाज तो अपना सकता है लेकिन स्त्रियों के लिए वे वर्जित हैं, उन्हें गीतांजलि श्री की स्त्री अपनाती हैं और स्वाभिमान के साथ करती हैं। शिक्षित, सम्पन्न और अपने जीवन के संबंध में निर्णय लेने का अधिकार इन स्त्रियों के पास है। लेकिन जहां ऐसा नहीं है वहाँ वे इसका प्रयास जरूर करती हैं। अगर वे ऐसा नहीं करती हैं तो उनके व्यवहार में कहीं न कहीं इसका संकेत दिख जाता है।

सांप्रदायिकता की समस्या और सद्भाव पैदा करने वाला विचार भी इन रचनाओं में अक्सर आता है। एक-दो रचनाओं को छोड़ दें तो स्त्री इन रचनाओं में है। वह हिन्दू-मुस्लिम जीवन में झगड़े और हिंसा को देखकर खामोश नहीं रहती है। वह किसी न किसी रूप में जीवन में सद्भाव लाने की कोशिश करती है। 'हमारा शहर उस बरस' में श्रुति एक रचनाकार होने के साथ-साथ हनीफ़ की पत्नी है और दोनों धर्मों और दोस्तों के बीच आ रहे वैमनस्य के प्रति उदासीन नहीं है। वह इसे दर्ज भी कर रही है और दूर करने की भी कोशिश करती है।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि गीतांजलि श्री के लेखन में सांप्रदायिक सद्भाव और स्त्री मुख्य रूप से दो विषय हैं। उनकी भाषा और गद्य की शैली काफी भिन्न है। यहाँ उसके बारे में लिखने का अवकाश नहीं है।

---

[1] विभिन्न किताबों के फ्लैप से मिली जानकारी- अनुगूँज, माई, प्रतिनिधि कहानियाँ, वैराग्य और हमारा शहर उस बरस के आधार पर।

[2] गीतांजलि श्री, अनुगूँज, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1991, पृष्ठ संख्या 13

[3] वही, पृष्ठ संख्या 33

[4] वही, पृष्ठ संख्या 45

[5] वही, पृष्ठ संख्या 50
[6] वही, पृष्ठ संख्या 56
[7] वही, पृष्ठ संख्या 118
[8] वही, पृष्ठ संख्या 121
[9] वही, पृष्ठ संख्या 142
[10] गीतांजलि श्री, वैराग्य, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1999, पृष्ठ संख्या 26
[11] वही, पृष्ठ संख्या 33
[12] वही, पृष्ठ संख्या 55
[13] गीतांजलि श्री, वैराग्य, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1999, पृष्ठ संख्या 172
[14] गीतांजलि श्री, यहाँ हाथी रहते थे, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2022, पृष्ठ संख्या 143
[15] सत्या राय, भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, संस्करण 1990 पृष्ठ संख्या 488
[16] अमरेन्द्र कुमार, सांप्रदायिकता: अतीत से समकाल तक, प्रभाकर प्रकाशन, संस्करण 2021, पृष्ठ संख्या 7
[17] सिमोन द बोउवार, द सेकंड सेक्स का अनुवाद, स्त्री उपेक्षिता, हिन्दी पॉकेट बुक्स, संस्करण 1994, पृष्ठ 145
[18] वही, पृष्ठ संख्या 2
[19] महादेवी वर्मा, शृंखला की कड़ियाँ, साधना-सदन प्रयाग, तृतीय संस्करण 1944, पृष्ठ संख्या 190
[20] वही, पृष्ठ 17
[21] वही, पृष्ठ 14
[22] वही, पृष्ठ 175